स्वतन्त्रता के प्रिय सेनानी

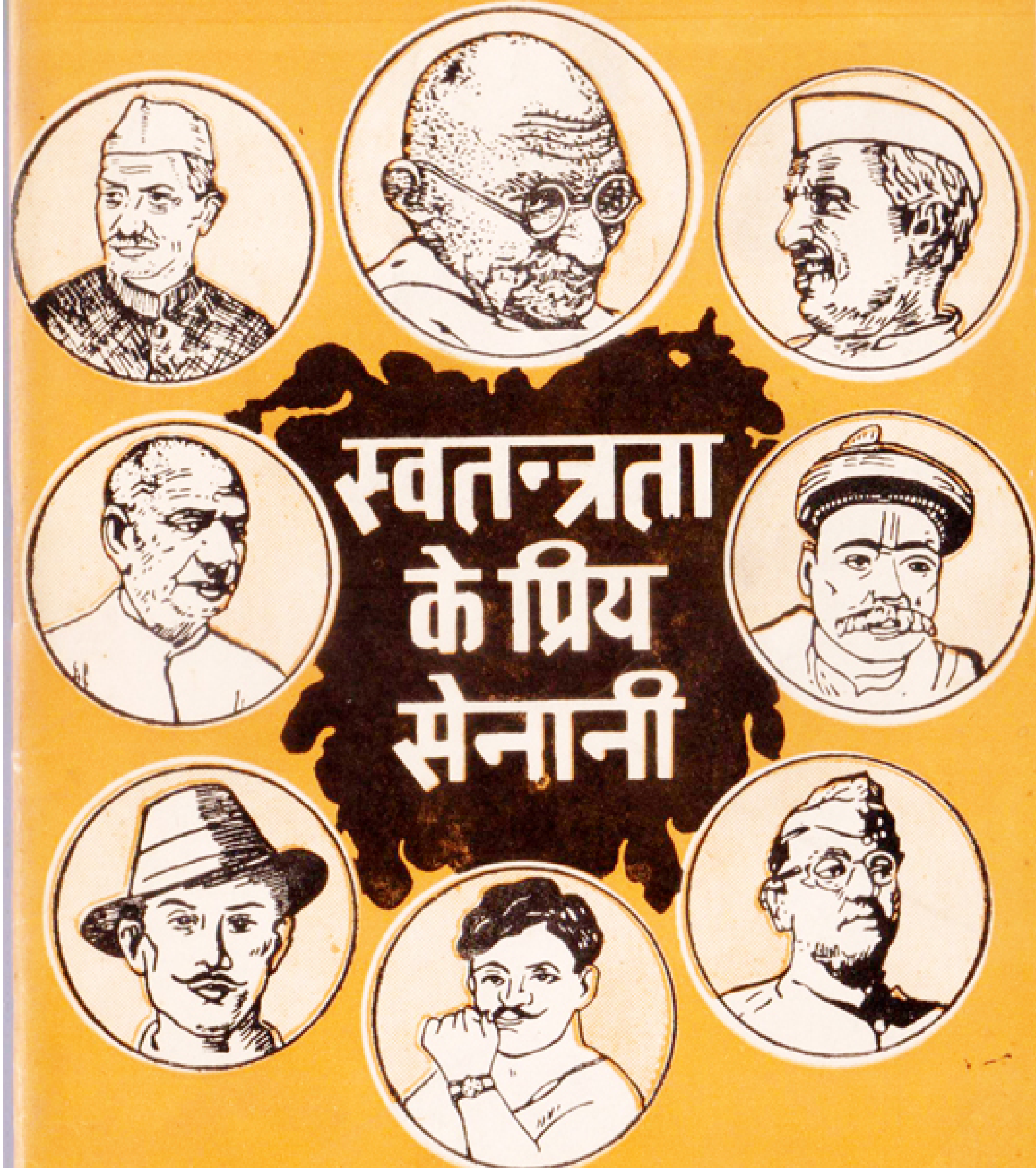

विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

स्वतन्त्रता के प्रिय सेनानी

विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

प्रकाशक
मधु प्रकाशन
42, ताशकन्द मार्ग, इलाहाबाद-211001

© विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

संस्करण	द्वितीय
प्रकाशन वर्ष	१९८५
प्रकाशक	मधु प्रकाशन ४२, ताशकंद मार्ग, इलाहाबाद–२११००१
मुद्रक	अशोक मुद्रण गृह ४२, ताशकंद मार्ग, इलाहाबाद–२११००१
मूल्य	छह रुपये

प्रकाशकीय

'स्वतन्त्रता के प्रिय सेनानी' नाम की इस छोटी-सी काव्य-पुस्तिका में कवि ने भारत माता के दस स्वनामधन्य सपूतों के प्रति अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित किये हैं। भारत के स्वातन्त्र्य-संग्राम में इन सेनानियों के नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। देश और जाति की मान-मर्यादा और स्वतन्त्रता के नाम पर उन्होंने अपने सर्वस्व की बलि देकर न केवल अपने देश-वासियों के सम्मुख, अपितु सारी मानव-जाति के लिए साहस, वीरता, अध्यवसाय और आत्मोत्सर्ग की भावना का उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत किया।

स्वतन्त्रता के इन प्रिय सेनानियों की मातृभूमि की स्वतन्त्रता के इतिहास में अलग-अलग भूमिकाएँ रही हैं। प्रत्येक के चरित्र की विशेषताएँ भी एक दूसरे से भिन्न हैं। पर जो विशेषता इन सभी को एक सूत्र में बाँधती है वह है उनकी उत्कट देश-भक्ति और राष्ट्र के लिए सब कुछ न्यौछावर कर देने का संकल्प।

सहृदय कवि ने राष्ट्रीय जीवन के परिप्रेक्ष्य में हर सेनानी के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उसे अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

आशा है 'स्वतन्त्रता के प्रिय सेनानी' की कविताएँ पाठकों को पसंद आएँगी।

कविता-क्रम

१.	तिलक	५
२.	गोपाल कृष्ण गोखले	६
३.	बापू	१२
४.	चाचा नेहरू	१५
५.	सुभाष चन्द्र बोस	१८
६.	सरदार पटेल	२४
७.	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	२८
८.	लाल बहादुर शास्त्री	३१
९.	चन्द्रशेखर आज़ाद	३४
१०.	सरदार भगत सिंह	३७

तिलक

तिलक बाल गंगाधर तुमको,
शत-शत बार प्रणाम हमारा।

पराधीनता के बन्धन में,
बन्दी थी जब भारतमाता।
तुमने तन-मन-धन अर्पित कर,
देश प्रेम से जोड़ा नाता॥

स्वतंत्रता अधिकार जन्म से,
दिया यही जन जन को नारा।
तिलक बाल गंगाधर तुमको,
शत-शत बार प्रणाम हमारा ।।

आजादी के घोर युद्ध में,
बने एक अविचल सेनानी।
लड़े अनय अत्याचारों से,
हार नहीं जीवन में मानी ।।

सुन सन्देश क्रान्ति का तुमसे,
जाग उठा था भारत सारा।
तिलक बाल गंगाधर तुमको,
शत-शत बार प्रणाम हमारा।।

तुमने गीता का रहस्य भी,
बड़ी सरलता से समझाया।
मिटा अविद्या-अन्धकार को,
नवल ज्ञान का दोप जलाया।।

युग-युग तक सारी दुनिया में,
अमर रहेगा नाम तुम्हारा।
तिलक बाल गंगाधर तुमको,
शत-शत बार प्रणाम हमारा ।।

गोपाल कृष्ण गोखले

जय-जय-जय गोखले तुम्हारी ।

तुमने देश देख बन्धन में,
नव-जागरण किया जन जन में ।
स्वतन्त्रता के स्वर से गुंजित,

मातृभूमि हो गयी हमारी ।
जय-जय-जय गोखले तुम्हारी ।।

तुम समाज के बने सुधारक
उच्चकोटि के श्रेष्ठ विचारक।
शिक्षा के विकास में तुमने,

शक्ति लगा दो अपनी सारी।
जय-जय-जय गोखले तुम्हारी॥

दोनों, दुखियों के अनुरागी,
बने राष्ट्रहित अनुपम त्यागी।
भूल नहीं सकता तुमको जग,

अमर कीर्ति के तुम अधिकारी।
जय-जय-जय गोखले तुम्हारी॥

जन्म-दिवस हम सभी मनाते ।
तुमसे नई प्रेरणा पाते ।।
गौरव-गान कर रहे मिल कर,

बालक - वृद्ध - युवक नर-नारी ।
जय-जय-जय गोखले तुम्हारी ।।

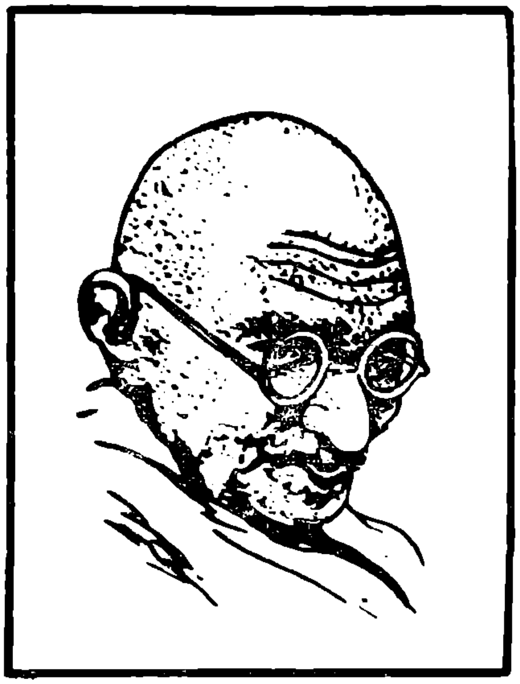

बापू

हे बापू ! तुमको नमस्कार ।

भारत को लखकर पराधीन,
भावना भरी तुमने नवीन ।
जग उठा सभी में देश-प्रेम,

सब बढ़े तुम्हारी सुन पुकार,
हे बापू ! तुमको नमस्कार ।।

तुम रहे झेलते दुःख अनेक।
छोड़ी स्वतन्त्रता की न टेक ।।
सपना साकार हुआ सबका,

जन-मन में उमड़ा सुख अपार।
हे बापू ! तुमको नमस्कार ।।

तुम चले शान्ति की पकड़ राह,
कर सदा सत्य की एक चाह।
सन्देश एकता का देकर,

दीनों, दुखियों को किया प्यार।
हे बापू ! तुमको नमस्कार ।।

बापू

है आज तुम्हारा अमर नाम ।
युग-युग तक होगा यश लमाम ।।
इतिहास न सकता तुम्हें भूल,

तुम-सा न मिलेगा कर्णधार ।
हे बापू ! तुमको नमस्कार ।।

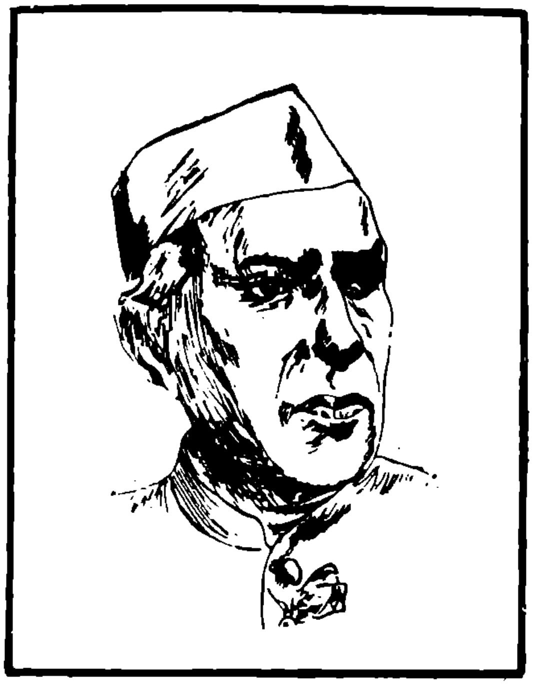

चाचा नेहरू

चाचा नेहरू ! तुम्हें हमारा सौ-सौ बार प्रणाम

जब परवशता के बन्धन में बँधा समूचा देश ।
पल भर भी तुम नहीं सह सके भारत माँ का क्लेश ।।

त्याग दिया तुमने तन-मन सब सुख वैभव धन धाम
चाचा नेहरू ! तुम्हें हमारा सौ-सौ बार प्रणाम ।।

तुमने तो दुख की लपटों से खेले हर दम खेल।
झुके नहीं तुम संघर्षों में गये विहँस कर जेल ।।

मिली हयारी मातृभूमि को स्वतन्त्रता अभिराम।
चाचा नेहरू ! तुम्हें हमारा सौ-सौ बार प्रणाम ।।

बने राष्ट्र के नव निर्माता गूँजा जय-जयकार।
दीनों दुखियों असहायों को दिया हृदय का प्यार ।।

करते रहे कर्म की पूजा; था आराम हराम।
चाचा नेहरू ! तुम्हें हमारा सौ-सौ बार प्रणाम ।।

तुमसे ही स्वदेश ने पाया दुनिया में सम्मान।
करते पंचशील का सब ही अब भी गौरव-गान ।।

इतिहासों में अमर रहेगा सदा तुम्हारा नाम।
चाचा नेहरू ! तुम्हें हमारा सौ-सौ बार प्रणाम ।।

सुभाष चन्द्र बोस

जब गोरों ने अनय मचाया,
भारत - भू पर भारी ।
घोर अनीति, अनाचारों से,
सहमी जनता सारी ।।

परवशता के प्रबल पाश में,
बँधा देश था अपना ।
देखा उसको मुक्त कराने
का तब किसने सपना !

मातृ-भूमि की पीड़ा हरने
कौन सामने आया !
आजादी के दीवानों में
किसने नाम लिखाया !

त्याग दिया किसने स्वदेश हित,
तन-मन जीवन सारा !
चला लगाने स्वतंत्रता का
कौन निडर हो नारा !

अर्पित कर दी किसने हँस कर,
अपनी मस्त जवानी !
कौन बन गया मुक्ति-युद्ध का,
परम वीर सेनानी !

किसने नगर-नगर, घर-घर में,
नूतन ज्योति जगायी !
हृदय-हृदय में देश-प्रेम की,
चिनगारी सुलगायी !

कौन चल पड़ा मर मिटने को,
ले वीरों की टोली !
"दिल्ली चलो", "चलो दिल्ली को"
यह किसकी थी बोली !

तुमसे ही स्वदेश ने पाया दुनिया में सम्मान।
करते पंचशील का सब ही अब भी गौरव-गान ॥

इतिहासों में अमर रहेगा सदा तुम्हारा नाम।
चाचा नेहरू ! तुम्हें हमारा सौ-सौ बार प्रणाम ॥

सुभाष चन्द्र बोस

जब गोरों ने अनय मचाया,
भारत - भू पर भारो ।
घोर अनीति, अनाचारों से,
सहमी जनता सारी ।।

परवशता के प्रबल पाश में,
बँधा देश था अपना ।
देखा उसको मुक्त कराने
का तब किसने सपना !

मातृ-भूमि की पोड़ा हरने
कौन सामने आया !
आजादो के दोवानों में
किसने नाम लिखाया !

त्याग दिया किसने स्वदेश हित,
तन-मन जोवन सारा !
चला लगाने स्वतंत्रता का
कौन निडर हो नारा !

अर्पित कर दी किसने हँस कर,
अपनी मस्त जवानी !
कौन बन गया मुक्ति-युद्ध का,
परम वीर सेनानी !

किसने नगर-नगर, घर-घर में,
नूतन ज्योति जगायी !
हृदय-हृदय में देश-प्रेम की,
चिनगारी सुलगायी !

कौन चल पड़ा मर मिटने को,
ले वीरों की टोली !
"दिल्ली चलो", "चलो दिल्ली को"
यह किसकी थी बोली !

लाल किले पर फहरे जय-ध्वज,
किसकी थी अभिलाषा !
अन्तिम दम तम आज़ादी की,
तजो न किसने आशा !

आज गा रहीं गंगा यमुना
किसकी गौरव - गाथा !
किसके दिव्य गुणों के सम्मुख
झुकता सबका माथा !

जान न पाये क्या तुम उसको
वह सुभाष सेनानी ।
भूलेगा इतिहास न जिसको,
युग-युग कीर्ति कहानी ।।

कारागारों में भी किसने,
कष्ट न कोई माना !
स्वाभिमान को ही जीवन में,
सबसे बढ़ कर जाना !

फूलों को तज करके किसने
शूलों को अपनाया !
संघर्षों में भी निर्भय हो,
कौन सदा मुस्काया !

कौन बना आज़ाद हिन्द
सेना का अमर प्रणेता !
कोटि-कोटि तरुणों के उर का,
एक महान विजेता !

"दो तुम रक्त, मुक्ति दूंगा मैं"
यह था किसका नारा !
कह "जयहिन्द" ब्रिटिश शासन को
था किसने ललकारा !

सुभाष चन्द्र बोस

सरदार पटेल

जब गोरों ने अनय मचाया,
भारत का जन जन थर्राया

आज़ादी के दीवानों में,
तुमने अपना नाम लिखाया ।।

कूद पड़े तुम मुक्ति-युद्ध में,
करने महाकाल से खेल ।
धन्य - धन्य सरदार पटेल ।।

लाल किले पर फहरे जय-ध्वज,
किसकी थी अभिलाषा !
अन्तिम दम तम आज़ादी की,
तजी न किसने आशा !

आज गा रहीं गंगा यमुना
किसकी गौरव - गाथा !
किसके दिव्य गुणों के सम्मुख
झुकता सबका माथा !

जान न पाये क्या तुम उसको
वह सुभाष सेनानी ।
भूलेगा इतिहास न जिसको,
युग-युग कीर्ति कहानी ।।

कारागारों में भी किसने,
कष्ट न कोई माना !
स्वाभिमान को ही जीवन में,
सबसे बढ़ कर जाना !

फूलों को तज करके किसने
शूलों को अपनाया !
संघर्षों में भी निर्भय हो,
कौन सदा मुस्काया !

कौन बना आज़ाद हिन्द
सेना का अमर प्रणेता !
कोटि-कोटि तरुणों के उर का,
एक महान विजेता !

"दो तुम रक्त, मुक्ति दूँगा मैं"
यह था किसका नारा !
कह "जयहिन्द" ब्रिटिश शासन को
था किसने ललकारा !

सुभाष चन्द्र बोस

सरदार पटेल

जब गोरों ने अनय मचाया,
भारत का जन जन थर्राया

आज़ादी के दीवानों में,
तुमने अपना नाम लिखाया ।।

कूद पड़े तुम मुक्ति-युद्ध में,
करने महाकाल से खेल ।
धन्य - धन्य सरदार पटेल ।।

सत्य-शान्ति से नाता जाड़ा
नहीं कभी अपना प्रण तोड़ा ।

जिधर उठ गई दृष्टि उधर ही,
बैरी-दल का मुखड़ा मोड़ा ।

किया समस्त स्वदेश संगठित
हटा दिया विघ्नों को ठेल ।
धन्य-धन्य सरदार पटेल ।।

तुमने हँस कष्टों को झेला,
तुम्हें लगी सुखमय हर बेला ।

मातृभूमि के लिए निडर हो,
तुमने ज्वालाओं से खेला ।।

हाथो में पहनों हथकड़ियाँ
गये सदा मुस्काते जेल ।
धन्य-धन्य सरदार पटेल ।।

तुमने नूतन क्रान्ति मचाई,
देश-प्रेम की ज्योति जलाई।

अपने ओजस्वी वचनों से,
सोयी भारत-भूमि जगाई॥

बढ़े पूज्य बापू के पथ पर,
रखा सभी लोगों से मेल।
धन्य-धन्य सरदार पटेल॥

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

देशरत्न राजेन्द्र ! तुम्हें है कोटि प्रणाम हमारा

बने हमारी स्वतन्त्रता के तुम महान सेनानी ।
बढ़े देश सेवा के पथ पर, त्यागी मस्त जवानी ।।

किया समर्पित मातृभूमि पर तन-मन-जीवन सारा
देशरत्न राजेन्द्र ! तुम्हें है कोटि प्रणाम हमारा !

संघर्षों को भी तो तुमने, हँसकर ही अपनाया।
कष्टों की परवाह नहीं की, धैर्य सदा दिखलाया ॥

लिया निरन्तर सत्याग्रह का तुमने एक सहारा।
देशरत्न राजेन्द्र ! तुम्हें है कोटि प्रणाम हमारा ॥

हुए सादगी, सौम्य, सरलता के तुम परम पुजारी।
सत्य-अहिंसा-प्रेम-एकता-सेवा के व्रतधारी ॥

बही तुम्हारे हृदय-सिन्धु में करुणा की ही धारा।
देशरत्न राजेन्द्र ! तुम्हें है कोटि प्रणाम हमारा ॥

अधिकारों से बढ़ कर तुमने कर्तव्यों को जाना।
मिला राष्ट्रपति का पद फिर भी बन्धु सभी को माना ।।

इतिहासों में अमर रहेगा युग-युग नाम तुम्हारा।
देशरत्न राजेन्द्र ! तुम्हें है कोटि प्रणाम हमारा ।।

स्वतन्त्रता के प्रिय सेनानी

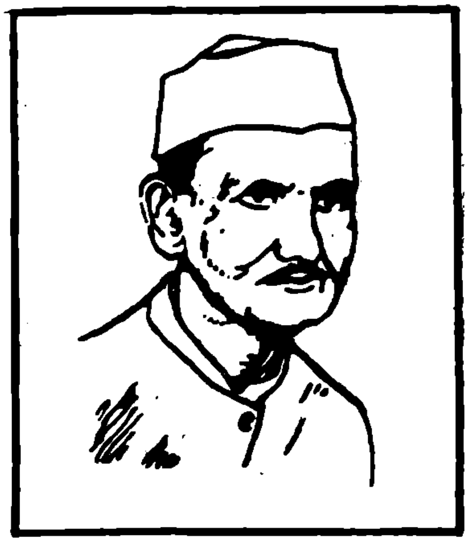

लाल बहादुर शास्त्री

भारत माँ के लाल बहादुर ! तुमको कोटि प्रणाम !
पले अभावों की गोदी में, जन्में होकर दीन।
निज श्रम से ही उच्च शिखर पर हुए किन्तु आसीन ।।
कष्ट न माना कभी कष्ट को, किया सतत संघर्ष।
बढ़े निरन्तर दृढ़ निश्चय ले हुआ तभी उत्कर्ष ।।

सभी झुकाते सिर श्रद्धा से देख प्रगति अभिराम।
भारत माँ के लाल बहादुर ! तुमको कोटि प्रणाम ।।

किया देश सेवा में तुमने, अपना सब कुछ दान।
स्वतन्त्रता के बने सिपाही, रखा आत्म-सम्मान ।।
चले पूज्य नेहरू के पथ पर सदा निभाया साथ।
होने दिया कभी क्या दुर्बल प्रिय नेता का हाथ !

नव निर्माण किया भारत का जगे नगर घर-ग्राम।
भारत माँ के लाल बहादुर ! तुमको कोटि प्रणाम ।।

फूलों से कोमल, पाषाणों से भी अधिक कठोर।
हिमगिरि से भी उच्च, नम्रता गुण से पूर्ण विभोर ।।
युद्ध-भूमि के कुशल विजेता, विश्व शान्ति के दूत।
धन्य हो गई पाकर वसुधा तुम सा वीर सपूत ।।

कर्मयोग की ही पूजा में, निरत रहे अविराम।
भारत माँ के लाल बहादुर ! तुमको कोटि प्रणाम ।।

किया संकटों में भी तुमने, सदा देश का त्राण,
हार नहीं मानी जीवन में, त्याग दिया निज प्राण।
हुए शान्ति की बलिवेदी पर, हँस कर तुम बलिदान।
स्वयं मिट गये रखा देश का अन्तिम दम तक मान ।।

भूल नहीं सकता युग-युग तक विश्व तुम्हारा नाम।
भारत माँ के लाल बहादुर ! तुमको कोटि प्रणाम ।।

चन्द्रशेखर आज़ाद

धन्य चन्द्रशेखर आज़ाद ।
जब था निज भारत परतन्त्र ।
तुमने चाहा बने स्वतन्त्र ।।
तुम चल पड़े क्रान्ति के पथ पर,
लगा गूंजने केहरि-नाद ।
धन्य चन्द्रशेखर आजाद ।।

मातृभूमि से कर अनुराग।
दिया देश-हित सब कुछ त्याग।।
करते रहे सतत संघर्ष,

लिया न सुख-सुविधा का स्वाद।
धन्य चन्द्रशेखर आज़ाद।।

हे महान साहसी सपूत।
तुम बन गये मुक्ति के दूत।।
अडिग रहे अपने निर्णय पर,

हुआ न तुमको कभी विषाद।
धन्य चन्द्रशेखर आज़ाद।।

अमर तुम्हारा है बलिदान।
युग-युग तुम्हें मिलेगा मान॥
उत्सर्गों के लिए सर्वदा,

तुमको राष्ट्र रखेगा याद।
धन्य चन्द्रशेखर आज़ाद॥

सरदार भगत सिंह

भगत सिंह सरदार,
तुम्हारा शत-शत वन्दन ।

स्वतन्त्रता - हित किया,
स्वयं सर्वस्व समर्पित ।
मातृभूमि के लिए कर दिया,
सब कुछ अर्पित ।।

कीर्ति तुम्हारी महँकेगी,
ज्यों महँके चन्दन ।
भगत सिंह सरदार,
तुम्हारा शत-शत वन्दन ॥

पंथ क्रान्ति का तुमने,
अपनाया जीवन में ।
आजादी की ज्योति,
जगाई थी जन-मन में ॥

तुमने चाहा टूटे,
परवशता का बन्धन ।
भगत सिंह सरदार,
तुम्हारा शत-शत वन्दन ॥

झूल गये फाँसी पर तुम,
होकर के निर्भय ।
देख अमर उत्सर्ग,
कर उठी जनता जय-जय ।।

होगा सदा तुम्हारा,
दुनिया में अभिनन्दन ।
भगत सिंह सरदार,
तुम्हारा शत-शत वन्दन ।।